समाज विकासमाला

कुम्हार की बेटी

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १०३

कुम्हार की बेटी

आन्ध्र प्रदेश की रामायण-लेखिका मोल्ला का परिचय
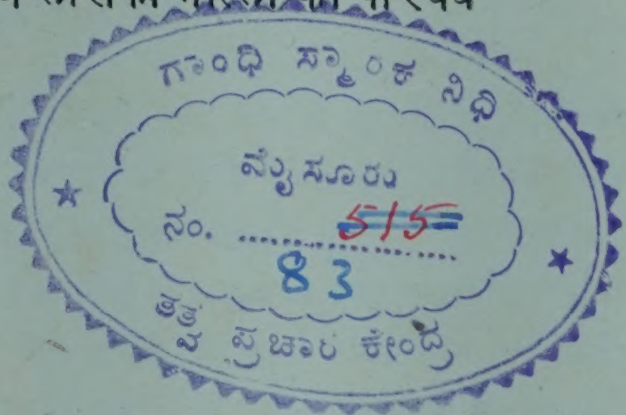
लेखक

विष्णु प्रभाकर

सम्पादक

यशपाल जैन

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
शान्तिलाल जैन
श्री जैनेन्द्र प्रेस,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बहुत सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

दक्षिण भारत के चार प्रदेशों में एक है आंध्र प्रदेश। वहां की रहनेवाली मोल्ला नाम की देवी का नाम घर-घर में बड़े आदर से लिया जाता है। मोल्ला का जन्म कुम्हार के घर में हुआ था, लेकिन भक्ति और ज्ञान जाति नहीं देखते। मोल्ला को ज्ञान उपजा। उन्होंने रामायण लिखी, जिसका आंध्र में बड़ा प्रचार है।

इस नाटक में इन्हीं मोल्ला का परिचय दिया गया है। नाटक इस ढंग से लिखा गया है कि गांवों में भी खेला जा सके। उसी हिसाब से उसके पात्र और सज्जा रक्खी गई है।

इस नाटक से सीख मिलती है कि धन या जाति से कोई बड़ा नहीं बनता। बड़ा वह होता है, जो बड़े काम करता है।

—सम्पादक

कुम्हार की बेटी

पात्र

अवधानी : मन्दिर का अधिकारी, कट्टरपंथी।
आचारी : गांव का अधिकारी
केसना : गांव का एक भक्त कुम्हार
मोल्ला : केसना की बेटी, रामायण की रचना करने वाली
देवदासी : मन्दिर में नाचने गानेवाली
पोली : गांव का एक अछूत
राम : आंध्र के जाने-माने महाकवि तेनालि रामलिंगम्
महाराज : उस समय के शासक महाराजाधिराज-कृष्णदेवराव

दृश्य पहला

(मंच की सज्जा साधारण। आन्ध्र देश का एक गांव। एक ओर मुख्य मन्दिर का दरवाजा। पास में एक अधिकारी का घर। दूसरे कोने में दूर कुछ गरीबों के घर। बीच में मार्ग। पास ही वहीं मण्डपम भी बन सकेगा। इस समय अधिकारी के घर के आगे अवधानी गरीब लोगों को धमका रहा है।

(भीड़ कोलाहल कर रही है। कुछ तीव्र और कुछ करुण स्वर उठते हैं।)

अवधानी : मैं जानता हूं, तुम्हें किसने भड़काया है। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम अपने को क्या समझने लगे हो। लेकिन यह समझलो कि मैं तुम्हारी एक भी न चलने दूंगा। मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा। मैं तुम्हें मिटा दूंगा। तुम लोगों की इतनी हिम्मत कि मेरा घर लूट लो! देवता का अपमान करो! सैनिको!

(केसना का भागते हुए प्रवेश)

केसना : क्षमा, क्षमा करो। इनका कोई अपराध नहीं है। इन्होंने जो कुछ किया मेरे कहने पर ही किया है। इन्हें छोड़ दीजिए और मुझे पकड़ लीजिए।

अवधानी : शाबाश! तो तुम आ गए! सैनिको, इसे पकड़लो। यही झगड़ा करवानेवाला है।

(मोल्ला का भागते हुए आना)

मोल्ला : नहीं-नहीं, ये कुछ नहीं जानते। झगड़े की जड़ मैं हूं। मैंने ही उन्हें भड़काया है।

अवधानी : तूने भड़काया है तो तू भी आ। सैनिको, इसे भी गिरफ्तार करो।

केसना : नहीं-नहीं, उसे छोड़ दो। वह तो पगली है, उसे छोड़ दो।

अवधानी : चुप हो जाओ। सैनिको, भीड़ को पीछे हटा दो। और केसना। तुम अपने अपराध का दंड सुनने को तैयार हो जाओ। (सैनिक भीड़ को हटाते हैं।

अवधानी और आचारी जरा अलग जाकर बातें करते हैं। फिर आचारी बोलते हैं)

आचारी : केसना, सुनो ! हमें इस बात का पता चल गया है कि तुम चोरी-चोरी नीच जातिवालों में 'वीर शैव' मत का प्रचार करते हो। तुम इन लोगों को ऊंची जातिवालों के विरुद्ध भड़काते हो। गांव की शांति को भंग करते हो। तुम्हारे कहने पर ही इन लोगों ने डाका डाला। तुम्हारी लड़की ने...

मोल्ला : जीहां, मैंने अपराध किया है। मेरे पिता ने...

आचारी : चुप रहो, तुमसे कौन पूछता है ?

केसना : हां बेटी, जबतक मैं यहां हूँ तबतक तुम चुप रहो। (तनिक रुककर) आप लोग विद्वान हैं, मालिक हैं, सब तरह से बड़े हैं। आपने मुझपर दोष लगाया है कि मैंने इन लोगों को वीर शैव बना दिया है। मैंने इन्हें लूटमार करने के लिए भड़काया है, पर मैं श्रीराम की सौं खाकर कहता हूं, मैंने वीर शैव मत का प्रचार नहीं किया। इनके घर जल गये थे, उसीके कारण ये आवेश में आ गये और लूटमार की। मैं इन्हें रोक न सका, यह मैं मानता हूं। मेरा अपराध है। उसके लिए मुझे दंड दीजिए। पर...पर, इस नादान लड़की को छोड़ दीजिए। यह अनजान है, अबोध है।

आचारी : केसना, हम तुम्हें भी छोड़ सकते हैं, अगर तुम एक बात मानो तो।

केसना : क्या, क्या बात है ? वह बताओ...

आचारी : तुम मोल्ला का विवाह तुरंत तिक्कना से कर दो।

(सब अचरज से एक-दूसरे को देखते हैं)

केसना : आपने जो कुछ कहा, ठीक कहा। महाराज, मैं भी उससे यही कह रहा हूं। तिक्कना पसन्द न हो तो किसी और से शादी करलो। पर वह मानती ही नहीं। शादी-विवाह की बात सुनते ही नाराज हो जाती है।

मोल्ला : हो जाती हूं। मुझे शादी करने को कहने वाले यह कौन होते हैं ! शादी करूंगी या नहीं करूंगी या किसके साथ करूंगी, यह सोचना मेरा काम है, तुम्हारा या और किसी का नहीं।

अवधानी : सुन लिया आपने। यह बिना कड़े दंड के माननेवाली नहीं है। मैं कहता हूं, इसी को नहीं, इसके पिता को भी दंड मिलना चाहिए।

आचारी : मोल्ला, तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम शादी करने के विरुद्ध नहीं हो। इसलिए अगर तुम्हें तिक्कना ठीक नहीं लगता तो किसी और से शादी कर लो। बोलो, किसे पसंद करती हो—

मनुष्य को या देवता को ।

मोल्ला :(आवेश से) मैं मनुष्य को पसन्द करती हू ं न देवता को । मैं भगवान को चाहती हू ं । भगवान से शादी करू ंगी । समझे ।

(सब हँस पड़ते हैं)

आचारी : लेकिन क्या तुम मानती हो कि भगवान है ?
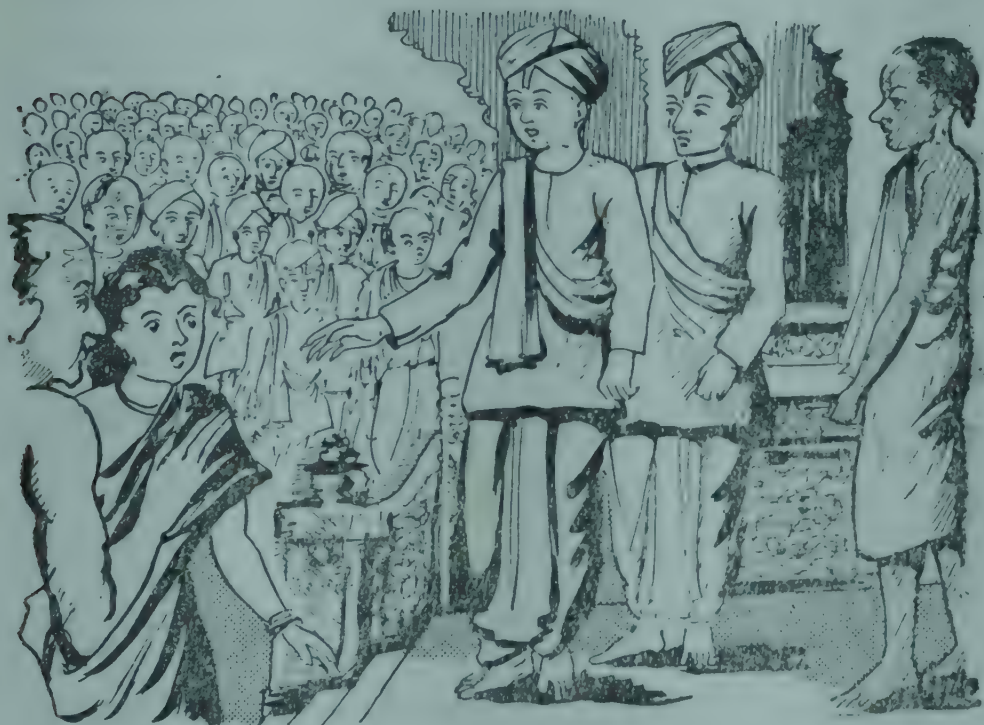
"मैं भगवान को चाहती हूँ ।"

मोल्ला : अगर हो तो । (फिर हँसी)

आचारी : यह हंसी ठट्ठे का अवसर नहीं है। सुनो केसना, तुमको एक हफ्ते का समय दिया जाता है ।

यह लड़की अभी बच्ची है। समझा-बुझाकर इसकी शादी करदो, नहीं कर सके तो तुम्हारा घरबार छीन लिया जायगा और तुम्हें गांव से निकाल दिया जायगा।

केसना : मैं आपको क्या जवाब दूं! आपने ठीक ही कहा है। लड़की सचमुच नादान है। शादी कर देने के बाद ठीक हो जायगी। भगवान हमारी रक्षा करें। आओ बेटी, चलें।

(वह मोल्ला को लेकर जाता है। सब उसके पीछे-पीछे जाते हैं। अधिकारी भी अपने घरों की ओर मुड़ते हैं। सहसा मंच पर अंधेरा छाने लगता है। गहरा अंधेरा हो जाता है। तभी गरीबों के घरों की ओर रोशनी पड़ती है। मोल्ला और उसके पिता सोते दिखाई देते हैं। धीरे-धीरे रोशनी उन दोनों पर ही पड़ती है। सहसा मोल्ला जाग उठती है)

मोल्ला : पिताजी, पिताजी, पिताजी....

केसना : (जागकर) कौन? बेटी, क्या बात है? कहो बेटी, क्या सोच रही हो?

मोल्ला : पिताजी, क्या तुम मानते हो कि भगवान हैं?

केसना : तुम ऐसा क्यों पूछती हो?

मोल्ला : बताओ न, पिताजी। वह कहां रहता है? कैसा होता है?

केसना : बेटी, ये सवाल तुम्हारे पूछने के नहीं हैं। साधु और वैरागी ऐसे सवाल उठाया करते हैं। तुम तो बेटी, अपनी जाति में किसी के साथ शादी करलो।

मोल्ला : शादी करने से भगवान का पता लग जायगा?

केसना : स्त्री के लिए पति ही भगवान होता है।

मोल्ला : उसीकी तो मुझे खोज है, लेकिन पिताजी, असली भगवान को देखा कैसे जा सकता है?

केसना : उसे कोई नहीं देख सकता, बेटी। उसका कोई रूप नहीं। वह तो निराकार निरंजन है।

मोल्ला : निराकार-निरंजन है?

केसना : हां बेटी, तू अब सोजा और सवेरे सोचकर बताना कि तू किससे शादी करेगी। सो जा...

मोल्ला : सोती हूं।...

(तनिक विराम। सन्नाटा। दूर कहीं कुत्तों की आवाज। फिर मोल्ला उठती है)

मोल्ला : पिताजी, सो गये? कैसा तेज है

इनके मुख पर ! कैसे भोले हैं ! कितना प्यार करते हैं मुझे ! मैं तो इनसे ठीक तरह बोलती भी नहीं। फिर भी यह मेरे लिए कितनी परेशानी उठाते हैं ! जैसे क्षमा का अवतार हों ! कितनी मुसीबतें उठाकर इन्होंने मुझे पाला है। मां तो मुझे बचपन में ही छोड़ कर चली गई थी। ये ही मेरी मां भी बने। ऐसे पिता को मैं कितना तंग करती हूँ।

(तभी पीछे से एक आवाज उठती है।)

आवाज : पिता को खुश करना चाहती हो तो शादी करलो।

मोल्ला : कौन ? कौन मुझे शादी करने को कहता है ? हां-हां, पिताजी कह रहे थे। पिताजी यह भी कह रहे थे कि भगवान हैं। क्या सचमुच भगवान हैं ? हैं तो कहां हैं ? क्या करते हैं ? पिताजी कहते थे कि शादी करने से भगवान का पता लग जायगा। क्या सच ?

आवाज : हां, सच। शादी करने से भगवान का पता लग जाता है।

मोल्ला : लग जाता है, लेकिन तुम कौन हो ?... कौन हो ?...

आवाज : मैं ! मैं मोल्ला हूं।

मोल्ला : मोल्ला ! यानी मैं ...यानी... ओह मैं

भी कैसी मूर्ख हूँ ! यह आवाज तो मेरी है... मैं बोल रही हूं । मैं शादी करना चाहती हूं... मैं शादी करना चाहती हूँ। हां-हां, मैं शादी करूंगी, पर...किससे करूंगी ?... किससे... किससे क्या, भगवान से ही क्यों न करूं ? भगवान है तो मैं उसीसे शादी करूंगी। हां, मैं भगवान को ढूंढूंगी... मैं जंगल में जाऊंगी। मैं वनों की खाक छानूंगी, पर भगवान को ढूंढकर रहूंगी। पर कैसे, क्या पिताजी मुझे जाने देंगे। नहीं, नहीं जाने देंगे...तो...तो...क्यों न अभी चली जाऊं ? अभी चली जाऊं, अभी ! हां, अभी ही जाना होगा। नहीं-नहीं, मैं पिता को नहीं छोड़ूंगी—न छोड़ूंगी तो भगवान कैसे मिलेंगे ? मैं भगवान को ढूंढूंगी...ढूंढूंगी... (उठकर) पिताजी, क्षमा करना, मैं जा रही हूं। मैं आपसे छिप कर जा रही हूं। जागने पर आप नहीं जाने देंगे। क्षमा करना। प्रणाम ! प्रणाम !

(प्रणाम करके जाती है। फिर वही सन्नाटा। कभी-कभी कोई तेज स्वर। फिर कोलाहल उठे। प्रभात के स्वर। मुर्गे की बांग। भिखमंगे के डमरू का स्वर। केसना के कुनमुनाने, फिर उठने का स्वर। भगवत् भजन, फिर पुकारना।)

केसना : मोल्ला, बेटी मोल्ला, अरे उठेगी नहीं—

(देखकर) हैं ! यहां तो वह है ही नहीं। कहां गई ? (पुकारकर) मोल्ला ! मोल्ला ! वह तो मुझसे पहले उठती ही नहीं थी। आज क्या बात है ! रात भी वह ऐसे-ऐसे सवाल पूछ रही थी। क्या हो गया इस अल्हड़ छोकरी को ? कहीं...नहीं-नहीं, यहीं कहीं होगी मोहल्ले में। पूछता हूं ।

(तेज़ी से जाता है। धीरे-धीरे तेज रोशनी होती है। लोग वहाँ आते हैं। जाते हैं। अधिकारी भी हंसते-हंसते आते हैं)

आचारी : तुमने सुना वह लड़की मोल्ला कहीं भाग गई। केसना सारे में ढूंढ़ आया।

अवधानी : ढूंढ़ने को क्या सूई थी। जानकर भागी है। मुझे तो उसके लच्छन पहले ही मालूम थे। चलो, गांव की बला टली। उसका बाप रहा है, उसे भी ठिकाने लगाना चाहिए ।

आचारी : (सोचकर) पर मोल्ला साधारण लड़की नहीं है। वह कहां जा सकती है !

अवधानी : अरे आप चिंता क्यों करते हैं ! धर्म की सदा जय होती है। वह पापिन थी, भाग गई। अब आप आराम से सोइये। आइये, देवदासी का गाना सुना जाय। लो, वह बाहर ही आ रही है।

(देवदासी मंदिर से आती है)

देवदासी : क्या मोल्ला का पता लगा ?

अवधानी : पता लगाने की जरूरत भी क्या है ! चलो, अंदर चलो । हम भी चलते हैं। चलिये, आचारीजी, गाना सुनेंगे ।

देवदासी : मेरे घर के अन्दर चलने की किसी को जरूरत नहीं है । न मैं किसीको गाना सुनाऊंगी । बेचारी लड़की न जाने कहां भटक रही होगी और तुम्हें गाने की सूझ रही है ! लो, वह केसना भी आ गया । क्यों केसना, कुछ पता लगा ?

(केसना का घबराये हुए आना)

केसना : नहीं माई, कुछ पता नहीं लगा। भगवान, मेरी बेटी की रक्षा करो।

देवदासी : हे मुरली मनोहर, हे कृष्णमुरारी, मोल्ला जहां भी हो, उसकी रक्षा करना। वह कितनी भोली है। उस दिन मुझसे कह रही थी कि तुमने भगवान से शादी की है। मैं भी भगवान से शादी करूंगी। पगली कहीं उन्हें ढूंढ़ने न चली गई हो !

केसना : माई-माई, तुम क्या कह रही हो ! रात मुझसे भी वह भगवान के बारे में पूछ रही थी ।

देवदासी : बाबा, तुम चिंता मत करो। घर चलो, भगवान सब भली करेंगे ।

(सब जाते हैं। परदा गिरता है ।)

दृश्य दूसरा

(सबकुछ पहले दृश्य जैसा है। भीड़ लगी है। एक ओर केसना खड़ा है। आचारी बोल रहा है।)

आचारी : **केसना, तुम्हें एक हफ्ते का समय दिया गया था। तुमने इस दया को हमारी कमजोरी समझा। मोल्ला का विवाह तो क्या करना था, तुमने उसे कहीं छिपा दिया है!**

अवधानी : **जी नहीं, भगवान से शादी करने भेज दिया है।** (हँसी)

केसना : (नम्रता से) **महाराज, मैं अभागा हूं। न जाने मेरी बेटी कहां चली गई! वही तो मेरी आशा थी, मेरा सहारा थी! न मालूम वह जिंदा है या मर गई! पर कुछ भी हो, आपकी आज्ञा का पालन मैं नहीं कर सका। आप जो चाहें मुझे दंड दें।**

अवधानी : **ठीक है। इसके घर का सामान सब नीलाम कर दो और इसे गांव से निकाल दो। पिछली बार यही फैसला किया गया था।**

(सब एकदम कांप उठते हैं, शोर मचाते हैं)

आचारी : **हां, यही फैसला किया गया था और अब इसीके अनुसार काम किया जायगा। केसना, तुम्हें कुछ कहना है!**

केसना : मैं तो कह चुका, अपराधी हूं, जो चाहे दंड दो।

आचारी : तो अपना घर और खेत मुझे दे दो। सामान नीलाम कर दिया जायगा।

केसना : मुझे मंजूर है, पर...पर

आचारी : अब पर के लिए कोई जगह नहीं है।

केसना : नहीं-नहीं, मेरी एक बात सुन लीजिए। मैं जाने को तैयार हूं, पर मुझे देवता की मूर्ति और ज्योति साथ ले जाने की आज्ञा दी जाय।

पोली : और इन्हें हमारी बस्ती में रहने की आज्ञा भी दी जाय।

अवधानी : नहीं, तुम एक तिनका भी नहीं ले जा सकते और न तुम गोपवरम में रह सकते हो।

(फिर शोर)

आचारी : (एकदम) सावधान !...केसना, तुम मूर्ति और ज्योति दोनों ले जा सकते हो। तुम अछूतों की बस्ती में रह सकते हो, पर याद रखो, यदि तुमने वहां शैव मत का प्रचार किया तो तुम्हें वहां से भी निकलवा देंगे। इन लोगों को वश में भी रखना होगा। समझे ?

केसना : समझ गया, महाराज।

अवधानी : लेकिन केसना अछूतों की बस्ती में नहीं रह सकता।

आचारी : क्यों ?

अवधानी : क्योंकि वह भी गोपवरम् के अंदर है।

आचारी : नहीं, वह गोपवरम से बाहर है। जो मैं कह चुका, वही होगा।

(सब हर्ष से पुकारते हैं—'आचारी ठीक कहते हैं', 'आचारी ठीक कहते हैं'। परदा गिरता है)

दृश्य तीसरा

(मंदिर के पास मंडप बना है। सभापीठ पर एक तेजवान पुरुष खड़े हैं। भीड़ है। लोग आते हैं। केसना भी पोली के साथ आता है)

पोली : वह, वह देखो, केसना। वह है महाकवि तेनालि रामलिंगम्। महाराज कृष्णदेव के चहेते आठ कवियों में से हैं।

केसना : अहा, कितना तेज है इनके मुख पर, मानो साक्षात् ब्रह्मा हो! इनके सामने भला आचारी कैसे ठहर सकते थे!

पोली : अजी, पहले तो बड़े अकड़े, पर महाकवि रामलिंगम् ने कहा "शोर मत करो, अभी पता लगा जाता है कि कौन बड़ा है।" यह कहकर उन्होंने कविता पढ़नी शुरू की। उनके मुख से कविता ऐसे बहती थी

"वह हैं महाकवि तेनालि"

जैसे गंगा की धारा। देखते-देखते उन्होंने आचारी को पराजित कर दिया। उसे वेदी से उतरना पड़ा।

केसना : सुनो-सुनो, वे कुछ कह रहे हैं...

रामलिंगम् : (गंभीर स्वर) कविता का पहला सूत्र जो जानते हों, वे आगे आ जायं। (सन्नाटा) कोई आगे नहीं आ रहा। क्या गोपवरम् गांव में कोई कविता करना नहीं जानता ? मैं जानना चाहता हूं कि आप लोगों में कोई कविता लिखनेवाला है ?

पोली : बोलो केसना, बोलो...जी, यह केसना हैं। आतुकवि केशन सेट्टी।

राम : कौन है केशन सेट्टी, आगे आओ।

केसना : नहीं-नहीं, महाराज। मैं कुछ नहीं हूं। आपके सामने मैं धूल के समान भी नहीं हूं।

(फिर सन्नाटा)

राम : मैंने तो सुना था कि गोपवरम् गांव पंडितों और कवियों के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन यहाँ तो कुछ भी नहीं दिखाई देता। वे सब कहां गये? रायलू के राज में तो एक भी ऐसा गांव नहीं, जहां कम-से-कम एक कवि न हो। यहां एक भी नहीं है! इस गांव को भ्रष्ट कर दिया जाय तो लाभ ही है।

(एकाएक दूर से एक तेजस्वी स्वर आता है।)

मोल्ला : ऐसा कभी नहीं हो सकता। ऐसा कभी नहीं हो सकता।

(चकित होकर सभी देखते हैं)

आचारी : यह कौन है?

अवधानी : यह, यह तो पहचाना हुआ स्वर है!

राम : यह कौन बोला? कोई नारी है?

केसना : कौन बोला? कौन बोला? जैसे मेरी बेटी हो, मोल्ला (जोर से) मोल्ला! क्या तुम मेरी मोल्ला हो?

(मोल्ला का मंच पर प्रवेश, मुख पर तेज़)

मोल्ला : हां पिताजी, मैं मोल्ला ही हूं। प्रणाम

पिताजी... (केसना ललक कर उसे छाती में भर लेता है)

केसना : मोल्ला मेरी बेटी...तू कहां चली गई थी ? तू ने तो—

मोल्ला : पिताजी क्षमा करें...

आचारी : मोल्ला, इतना तेज !

अवधानी : मोल्ला, नहीं-नहीं ।

पोली : मोल्ला, जैसे देवी हो !

राम : यह मोल्ला कौन है ?

अवधानी : यह इस केसना कुम्हार की बेटी है। कुछ दिन पहले यह गांव छोड़कर भाग गई थी। पगली है !

मोल्ला : पागल मैं हूँ या अवधानी महाराज तुम ?

राम : शांत लड़की ! तुम क्या कहना चाहती हो ?

मोल्ला : यही कि गोपवरम् गांव इतना गिरा हुआ नहीं है कि वहां कोई कवि न हो। अगर कोई और कविता नहीं लिख सकता तो मैं लिख सकती हूँ।

केसना : मोल्ला, बेटी मोल्ला, तुम नहीं जानतीं कि तुम किससे बातें कर रही हो।

मोल्ला : नहीं जानती तो अभी जान जाऊंगी। पर मैं अपने गांव का अपमान नहीं सह सकती।

राम : गांव का अपमान नहीं सह सकती ! जाति

की कुम्हारिन हो, अबला हो फिर भी इतना साहस !

मोल्ला : जाति की कुम्हार होने से क्या होता है ! मनुष्य में गुण प्रधान हैं। अबला हूं तो क्या हुआ ! अवसर मिलने पर नारी पुरुष से पीछे नहीं रह सकती।

राम : (धीरे से) इसे लोग पागल कहते हैं (प्रकट) तुम जानती हो मैं सुविख्यात कवि तेनालि राम हूं, महाराज कृष्णदेव राय के आठ दिग्गजों में से एक।

मोल्ला : आप भी जानते हैं कि मैं भक्तश्रेष्ठ अजातशत्रु आतुक्रि केशन सेट्टी की लड़की हूं।

राम : तुम जानती हो मैंने अबतक इतने ग्रंथ लिखे हैं, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती है। तुमने क्या लिखा है ?

मोल्ला : कुछ भी नहीं। पर आप कहें तो अभी एक काव्य लिखना आरंभ कर सकती हूं।

राम : क्या तुम राजाधिराज रायलू के बारे में काव्य लिख सकती हो ?

मोल्ला : राजा ! कौन राजा ? मैं ऐसे किसी राजा को नहीं जानती। मेरे लिए एक ही राजा है, राजाओं के राजा राम—(भावावेश)

राम : राम ! तो तुम राम को मानती हो ? अच्छा रामायण लिखो। मैं तुम्हें पांच वर्ष देता हूं।

मोल्ला : पांच वर्ष क्यों, पांच दिन ही दीजिए !

राम : पांच दिन ! लड़की, तुमको इतना अभिमान है तो सुनो यदि पांच दिन में तुम रामायण न लिख सकी तो—

मोल्ला : तो आप मेरे प्राण ले सकते हैं !

केसना : (एकदम) मोल्ला, मेरी बेटी, इतने दिन बाद तो तू लौटी । और अब...

मोल्ला : पिताजी, आप घबराते हैं ? आप जैसे महात्मा कवि की बेटी होते मेरे लिए कुछ भी कठिन नहीं है ।

राम : नहीं है तो ठीक है, पर सावधान ! पिता से लिखा लाना मना है । यहीं मंडप में बैठ कर लिखना होगा ।

मोल्ला : मुझे मंजूर है । मैं यहीं रहूंगी ।

(सब जाते हैं । अंधेरा होने लगता है, घोर अंधेरा, फिर पहले दृश्य की तरह केसना के मकान की ओर रोशनी पड़ती है । केसना और मोल्ला बातें कर रहे हैं ।)

केसना : बेटी, उस दिन ऐसी ही रात थी । ऐसा ही सन्नाटा था । तुम मुझे छोड़कर चली गई थीं । तुम जानती हो तुम्हारे पीछे...

मोल्ला : सब जानती हूं पिताजी, माफ करदो, तब मैं अज्ञानी थी । वन में मैंने ज्ञान पाया । भगवान

को पहचाना।

केसना : क्या तुमने भगवान को देखा, बेटी !

मोल्ला : हां पिताजी, अब भी देखती हूं, सदा देखती हूं। लेकिन पिताजी कल कैसे होगा? मैं महाकाव्य लिखने की बात कह चुकी हूं। आप कवि हैं। मुझे बताओ न, क्या मैं ऐसा कर सकूंगी ?

केसना : जिस विश्वास से तुमने बात कही है उसी विश्वास को बनाये रखो, भगवान को याद करती रहो। जरूर लिख सकोगी।

मोल्ला : सच !

केसना : हां, बेटी! यही विश्वास तो बाल्मीकि, कालिदास और पोतन्ना की शक्ति थी। इसी विश्वास के बल पर महाकाव्य की रचना हुई। श्रीकंठ मल्लेश्वर (शिवजी महाराज) से बिनती करो कि यह विश्वास तुम्हें धोखा न दे।

मोल्ला : यही करूंगी पिताजी, यही करूंगी।

(कहते-कहते मोल्ला उपासना करने लगती है)

मोल्ला : हे श्रीकंठ मल्लेश्वर! हे दिव्य ज्योति! आप मेरे स्वामी हैं, आप मेरे पति हैं, आपके चरणों में मेरा मन रमा है, आपके सहारे ही मैंने महाकाव्य लिखने की बात कही है। मेरी इस ढिठाई को क्षमा करो और मुझे शक्ति दो कि मैं उस वचन को पूरा कर

सकूं। मुझे ज्ञान दो कि मैं कभी अभिमान के वश में न होऊं।

(धीरे-धीरे केसना सो जाता है, पर वह समाधि में बैठी रहती है। संगीत उभरता है—फिर केसना जागता है।)

केसना : मोल्ला, बेटी मोल्ला! ओह, यह तो समाधि में है! कैसी शांति है मुख पर! कैसा तेज! आभा फूटी पड़ती है। वन में कहां-कहां घूमी! कैसा कठोर तप किया है! कैसे विश्वास से इसने रामायण

मोल्ला समाधि में

लिखने की प्रतिज्ञा की! तेनालि राम कैसे खुश हुए! मैं जानता हूं, यह रामायण जरूर लिखेगी, जरूर

लिखेगी। यह साधारण लड़की नहीं है, शक्ति है, शक्ति। ओह, कितना भाग्यशाली हूं।...चलूं, स्नान-पूजा से निबट लूं...

(जाता है। फिर मधुर संगीत गूंजता है। मोल्ला चौंकती है।)

मोल्ला : कौन! कौन है! कौन गाता है? कोई भी तो नहीं। क्या श्रीकंठमल्लेश्वर? कहां हो तुम? सामने आओ सामने (सहसा संगीत बंद हो जाता है) अरे, यह तो मैं अपने घर में हूं। ओह, समाधि में चली गई थी। शायद पिताजी थे। पिताजी, पिताजी... वे भी नहीं हैं। शायद स्नान करने गए हैं। चलूं, मैं भी चलूं। उन्हींसे पूछूंगी... (तभी रोने की आवाज पास आती है।) यह कौन है? कौन रोता है।

(पोली का प्रवेश)

पोली : (रोते-रोते) बेटी, बेटी मोल्ला!

मोल्ला : क्यों रोते हो काका? क्या बात है?

पोली : बेटी, तुम्हारे पिताजी...

मोल्ला : पिताजी! पिताजी को क्या हुआ?

पोली : पिताजी अमर हो गए। अब नहीं रहे। कनकय्या ने पूजा करते हुए उन्हें मार डाला।

मोल्ला : (एकदम) मार डाला! पिताजी पिताजी!

पोली : बेटी ! (ढाढ़स बंधाता है। कुछ लोग आते हैं। मोल्ला सहसा चौंक कर उठती है।)

मोल्ला : पर नहीं, मैं नहीं रोऊंगी। मुझे तो रामायण लिखनी है। उसीसे उन्हें शांति मिलेगी। ममता, चिंता, दुख, मुझे कुछ नहीं बांध सकता, कुछ नहीं बांध सकता, कुछ नहीं रोक सकता।

(सब चकित होकर देखते हैं। परदा गिरता है।

दृश्य चौथा

(वही मंडप। वहीं वेदी पर तेनालि राम। एक ओर मोल्ला लिखने में मगन है सब उसे देखते हैं। पीछे रामायण पाठ की आवाज उठती है। तेनालिराम उसे बड़े ध्यान से देख रहे हैं।)

राम : (स्वगत) सचमुच यह अद्भुत लड़की है। क्या इसे लड़की कहा जा सकता है ? कितना तेज है इसकी आंखों में ! कितनी गति हैं इसकी लेखनी में। (पत्र उठाकर देखते हैं। पढ़ते हैं।) क्या भाषा ! क्या गठन ! क्या भाव ! हर दृष्टि से इसकी रचना परिपक्व है,, मंजी हुई है। जैसे-जैसे इन पदों को पढ़ता हूं, चकित रह जाता हूं। (देवदासी का प्रवेश)

देवदासी : गुरुदेव !

राम : रंगनायकी ! तूने सुना आचारी और अव-

धानी महाराज के पास गये हैं, मेरी शिकायत करने कि रामा कुम्हार की बेटी के सामने हार गया है, यह कहने कि कुम्हार की बेटी कविता करती है। कुम्हारों का क्या अधिकार है कि वे कविता करें? कविता भी क्या किसी की बपौती है?

देवदासी : गुरुदेव, आप ठीक कहते हैं। मैंने तो यह भी सुना है . . .

राम : क्या रंगनायकी?

मोल्ला : रामायण की रचना करती हुई

देवदासी : रायलु महाराज मोल्ला को दंड देने आ रहे हैं।

राम : आ नहीं रहे, आ पहुंचे (दूर हाथी की घंटियाँ बजती हैं।)

देवदासी : सचमुच ! गुरुदेव, गुरुदेव, आप कुछ करिए। आप तो महाराज के प्रिय हैं।

(तभी स्वर उठता है)

स्वर : सावधान ! महाराजाधिराज श्रीकृष्णदेव राय पधारते हैं ! सावधान !

(अवधानी का प्रवेश)

अवधानी : (चिल्लाते हुए) महाराज पधारे हैं। सब खड़े होकर नमस्कार करो।

(सब फुसफुसाते हैं)

पोली : महाराज आ गये। अब क्या होगा ?

देवदासी : हे मुरली मनोहर, हे कृष्णमुरारी, अब तुम ही मोल्ला की सहायता कर सकते हो। हे रघुनाथ राम ! वह तुम्हारा ही चरित लिख रही है।

अवधानी : तुम सुनती नहीं, मोल्ला ! खड़ी हो जाओ।

मोल्ला : (पाठ करती रहती है)।

अवधानी : राजाधिराज पधारे हैं। उठना भी नहीं जानती !

(महाराज का प्रवेश। सब खड़े होकर प्रणाम में झुकते हैं)

महाराज : (स्वगत) यह लड़की है—कुम्हार की लड़की। नहीं-नहीं, यह तो स्वयं शारदा है (प्रकट) तेनालि राम ! क्या यही वह लड़की है, जो कविता करती है ?

राम : हां, महाराज। यह रामायण की रचना कर रही है।

आचारी : कुम्हार की बेटी को रामायण लिखने का तो क्या, साधारण कविता करने का भी अधिकार नहीं है।

राम : न हो, लेकिन मैं तो इस रामायण पर मुग्ध हूं। यह साधारण मानवी नहीं है। देखो तो महाराज इस रामायण को। भाव, भाषा, सभी तो अनोखी है।

महाराज : देख रहा हूं, राम ! तुम्हारे यहां होने की बात सुनकर ही मैं सब कुछ समझ गया था। जो राम को हरा सके वह क्या साधारण होगा ?

(हर्ष की फुसफुसाहट)

आचारी : लेकिन महाराज !

महाराज - चुप रहो, आचारी ! तुम समझते हो कि तुमने मुझे जो कुछ समझाया वह मैंने मान लिया था। मैंने तुम्हें यहां का अधिकारी इसलिए नहीं बनाया था कि तुम गरीबों और नारियों पर अत्याचार करो।

आचारी : (कांप कर) महाराज—महाराज वह जाति की कुम्हार है। मैंने धर्म का. . . .

महाराज : तुमने धर्म पालन किया। मूर्ख , धर्म भी क्या जड़ वस्तु हैं, देखते नहीं उसके तेज को। नहीं जानते, मोल्ला श्रांध्र देश में कविता करनेवाली नारियों में सबसे प्रथम है। उसने नारियों का, देश का, भाषा का मान बढ़ाया है। मुझे उसपर अभिमान है। (मोल्ला से) बेटी। मैं सबकुछ सुन चुका हूँ। इन दुष्टों को क्षमा करदो। इन्होंने तुम्हारे पिता को—

मोल्ला : महाराज, क्षमा आपको करनी है। आप राजा हैं। मैं नहीं चाहती कि किसी का कुछ बुरा हो।

(सभी लोग खुशी से फुसफुसाते हैं)

पोली : धन्य हो मोल्ला, तुम सचमुच केसना की बेटी हो।

देवदासी : मोल्ला महान् है। महान् पिता की महान् पुत्री !

राम : मोल्ला की कीर्ति अमर है। उसकी रामायण का गांव-गांव, घर-घर में पारायण होगा।

महाराज : सुनो आचारी, तुमने अबतक जो कुछ किया, उसका प्रायश्चित करो। मेरे राज्य में सब स्त्री-पुरुष समान हैं। सबको समान अधिकार हैं। जाओ, मंदिर में उत्सव की तैयारी करो। रंगनायकी....कहां

गई रंगनायकी ?

(मंदिर में नाच-गान की आवाज उभरती है)

राम : वह आपकी बात समझ गई, महाराज ! सुनिए, वह देवता के आगे नाच-गान कर रही है। चलिए महाराज, पहले उधर ही चलिए।

महाराज : चलो राम।

(सभी मंदिर में जाते हैं। भक्ति-गान उभरता है। परदा गिरता है।)

सैंतीस नये पैसे